‘वाल्मीकि रामायण’ और ‘रामचरितमानस’ की सीता का अध्ययन

स्त्री अध्ययन विषय में एम.फिल उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र : 2012-13

शोध निर्देशिका

सुप्रिया पाठक

सहायक प्रोफेसर

शोधार्थी

पूजा प्रजापति

पंजीयन सं. 2012/03/212/008

स्त्री अध्ययन विभाग

संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

भूमिका

'रामायण' और 'रामचरितमानस' हिंदू धर्म-ग्रंथ होने के साथ-साथ भारतीय समाज के परिवारों को नींव प्रदान करते हैं। परिवार के आदर्श स्वरूप को मजबूत करने के लिए सृजित रामचरितमानस किस तरह केवल पितृसत्तात्मक, ब्राह्मणवादी सोच से ग्रसित है यह इसके अध्ययन से ही स्पष्ट हो जाता है। रामकाव्य के इस महाकाव्य के कारण ही भक्तिकाल में सगुण भक्तिधारा के भगवान राम की स्थापना की गई। वाल्मीकि रामायण में पितृसत्तात्मक वर्चस्व के संकेत मिलने हैं, लेकिन वाल्मीकि ने उनका प्रतिकार करते हुए भी दिखाया है। वाल्मीकि की भी अपनी सीमाएं थीं, जिनके कारण वह उनका अतिक्रमण पूरी तरह से नहीं कर पाये। तुलसी का मंतव्य आदर्श चरित्रों के द्वारा परिवार और समाज को रामराज्य के रूप में गठित था। इसी वजह से उनकी सीता, वाल्मीकि की सीता की ति जबाव नहीं देती, क्रोध नहीं करती।

हम सीता को लक्ष्मी का अवतार मानकर माता सीता के रूप में पूजते हैं। उनके दुःख-दर्द को देखते, सुनते और रामलीलाओं में मंचित जरूर करते हैं पर उन तकलीफों के पीछे छिपी पितृसत्तात्मक समाज की असलियत को नहीं समझ पाते। हम ये नहीं देख पाते कि सीता ने जन्म से लेकर धरती में समाने तक दुःख ही उठाया है।

एक आम स्त्री 'सीता' पितृसत्तात्मक समाज के प्रहारों को चुपचाप सहती हुई वह सभी कुछ करती रही जो उससे करावाया गया। पितृसत्तात्मक समाज के कारण ही वह अपनी माता द्वारा जन्म लेते ही त्याग दी गई और राजा जनक को इस हालत में मिली की वह बच्ची सीता से सीता माता बन

गई। पूरे जीवन में सीता ने इसी पितृसत्तात्मक समाज का दंश झेला और सहने की इस विशेषता के कारण वह माता सीता बन पाई।